डॉ० कविता कुमारी सिंह
स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग
आर० एन० कॉलेज, हाजीपुर

पी॰ जी॰
तृतीय सेमेस्टर - ~~चतुर्दश~~ चतुर्दश पत्र
विषय - काव्य-रीति

काव्य-रीति से अभिप्राय

मोटे तौर पर काव्य रचना की शैली से है। यद्यपि संस्कृत काव्यशास्त्र में यह व्यापक अर्थ धारण करने वाला शब्द है। काव्य रीति को आत्मा मानकर काव्य पर विचार करने वाला एक सम्प्रदाय रीति सम्प्रदाय के नाम से विख्यात है, जिसके प्रवर्तक आचार्य वामन हैं। इनके अनुसार पदों की विशिष्ट रचना ही रीति है। —
"विशिष्ट पदरचना रितिः।"
विशिष्ट शब्द को स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं —
"विशेषो गुणात्मा।"

वामन ने गुण को विशेष महत्व

Change your life today. Don't gamble on the future, act now, without delay. – Simone de Beauvoir

दिया है। रीति काव्य की आत्मा है और गुण रीति के आश्रयभूत वैशिष्ट्य की आत्मा है।

'डॉ नगेन्द्र' अपनी पुस्तक 'रीति काव्य की भूमिका' में लिखते हैं कि — "रीति शब्द और अर्थ के आश्रित रचना चमत्कार का नाम है जो माधुर्य या ओज और प्रसाद गुणों के द्वारा चित्त को द्रवित, दीप्त और परिव्याप्त करती हुई रस दशा तक पहुँचती है।"

रीति के अन्य परिभाषाकार कहते हैं कि काव्य में रीति पदों के संगठन से रस को प्रकाशित करने में सहायक होती है। इस प्रकार रीति का काव्य में वही स्थान है जो शरीर में आंगिक संगठन का है। जिस प्रकार अवयवों का उचित सन्निवेश शरीर के सौंदर्य को बढ़ाता है, शरीर को उपकृत करता है, उसी प्रकार वर्णों का यथार-वाज प्रयोग शब्द रूपी शरीर और अर्थ रूपी आत्मा के लिए विशेष उपकारक है।

आचार्य वामन ने रीति के तीन

भेद बताया है — वैदर्भी रीति, गौड़ी रीति, पांचाली रीति।

आचार्य दण्डी केवल दो भेद मानते हैं वे पाञ्चाली का समर्थन नहीं करते। दण्डी 'रीति' के स्थान पर 'मार्ग' शब्द का प्रयोग करते हैं। परवर्ती आचार्यों ने 'रीति' के तीन से भी अधिक भेद स्थापित किये हैं। आचार्य विश्वनाथ ने रीति को काव्य का उपकारक मानते हैं। 'वक्रोक्तिजीवित' के लेखक 'कुन्तक' ने रीति का खुलकर विरोध किया। आचार्य 'मम्मट' उनके समर्थन में आये और रीति को वृत्तियों से जोड़ने की बात कही। 'राजशेखर' ने 'रीति' को काव्य का 'बाह्य तत्व' बताया। उनके अनुसार — 'वाक्यविन्यासक्रमो रीतिः'

Sunday

आचार्य वामन के पूर्ववर्ती आचार्य भरत और भामह ने गुणों का संबंध काव्य के सामान्य स्वरूप से माना है।

भरत ने 10 गुणों का उल्लेख किया है।

भामह ने 3 गुणों का उल्लेख किया है।
आचार्य वामन ने 20 गुण माने हैं, जिसमें — शब्द गुण दस तथा अर्थ गुण दस।
आचार्य वामन ने गुणों के भीतर अलंकार और रस का भी समावेश किया, जिससे गुणों को व्यापकता मिली।

काव्य-रीति के प्रकार —

आचार्य वामन ने रीतियों की संख्या तीन बताया है —

1. वैदर्भी रीति
2. गौडी रीति
3. पांचाली रीति

रीति - वैदर्भी - माधुर्य गुण, उपनागरिक वृत्ति - रस - करुण, श्रृंगार भक्ति और वात्सल्य

गौडी - ओज गुण, परुषा वृत्ति, रस वीर, रौद्र, वीभत्स

पांचाली - प्रसाद गुण, कोमला वृत्ति, रस - सभी रस।

Peace begins with a smile. – Mother Teresa